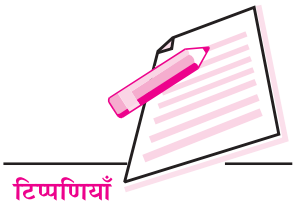


# 8

# पर्यटकों को लुभाती भारतीय वास्तुकला

दिल्ली, आगरा, जयपुर, मुंबई और कोलकाता शहरों की यात्रा करने के अलावा अन्य शहरों की यात्रा कर रहे भारतीय एवं विदेशी पर्यटक यहाँ सुन्दर इमारतों को पायेंगे। ये इमारतें, स्मारक, महल, मंदिर, चर्च और मस्जिद हो सकते हैं। कई पीढ़ियाँ इन अड़िग और मज़बूत रूप से खड़ी इमारतों का हिस्सा रही हैं, जो हमें अपने गौरवशाली अतीत की याद दिलाती हैं। इसलिए कला एवं वास्तुकला भारतीय संस्कृति का एक अहम हिस्सा है। आज हम जिस वास्तुकला में विशिष्ट-विशेषताओं को देखते हैं वह भारतीय इतिहास के दीर्घ काल में विकसित हुई हैं। भारतीय वास्तुकला के प्राचीन और महत्वपूर्ण साक्ष्य हमें हड़प्पा सभ्यता के शहरों में मिलते हैं जो अद्वितीय शहर योजना को दर्शाता है। हड़प्पा काल से पहले वास्तुकला की शैलियों को हिंदू, बौद्ध और जैन में वर्गीकृत किया गया है। मध्यकाल ने वास्तुकला की फारसी और स्वदेशी शैलियों के मिश्रण को देखा। इसके पश्चात् औपनिवेशिक काल में भारत को पश्चिमी वास्तुकला ने प्रभावित किया। इस प्रकार भारतीय वास्तुकला स्वदेशी शैलियों और बाह्य प्रभावों का संश्लेषण है, जिसने इसे एक अद्वितीय गुण प्रदान किया है। इस रोचक एवं महत्वूपर्ण पाठ्यक्रम के विद्यार्थी होने के नाते आपको भारतीय वास्तुकला के साथ इससे जुड़े स्मारकों को जानना और भी महत्वपूर्ण है, ताकि आप स्वयं के साथ-साथ पर्यटक ग्राहकों का मार्गदर्शन कर सकें।

## उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- विभिन्न समय मे बने हुए भारतीय वास्तुकला एवं मूर्तिकला की विशेषताओं की पहचान कर सकेंगे;
- भारतीय वास्तुकला में वर्ष दर वर्ष हुए विकास को जान सकेंगे;
- भारतीय वास्तुकला के विकास में बौद्ध एवं जैन समुदायों के योगदान को पहचान सकेंगे;
- भारत के मंदिरों के निर्माण में गुप्त, पल्लव और चोल शासकों द्वारा प्रयुक्त वास्तुकला का वर्णन कर सकेंगे;

टिप्पणियाँ



- मध्यकाल के उन विभिन्न प्रभावों की पहचान कर सकेंगे जिन्होंने भारतीय वास्तुकला पर छाप छोड़ी; और
- औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत महत्वपूर्ण वास्तुकला शैलियों को इंगित कर सकेंगे।

## 8.1 वास्तुकला का उद्भव और भारतीय स्वरूप

भारतीय वास्तुकला देश के विभिन्न भागों और क्षेत्रों में विभिन्न युगों में विकसित हुई। इन प्राकृतिक और पूर्व एतिहासिक और ऐतिहासिक कालों के अलावा भारतीय वास्तुकला के विकास को सामान्य तौर पर महान एवं महत्वपूर्ण ऐतिहासिक विकास ने प्रभावित किया था। सामान्यत: उप-महाद्वीप में महान साम्राज्यों के उद्भव एवं पतन ने भारतीय वास्तुकला को प्रभावित कर इसे नवीन आकार प्रदान किया। जिसका प्रभाव देश के विभिन्न क्षेत्रों पर देखा जा सकता है। इन विभिन्नताओं को इन स्थानों का भ्रमण करने वाले पर्यटक देख सकते हैं।

वास्तुकला एक आधुनिक घटना नहीं है। गुफा में रहने वाले स्त्री और पुरूषों ने जब अपना आश्रय बनाना शुरू किया, इसका उद्भव तभी से हो गया। इसने उनके रहने लायक स्थानों पर घर बनाने की खोज को भी जाग्रत किया जिसमें अनर्तचिन्हित सौन्दर्य था, जिसे देखकर आँखों को आनंद की अनुभूति होती थी। इस प्रकार वास्तुकला का उद्भव हुआ जो गृह निर्माताओं की आवश्यकता, कल्पना, क्षमता तथा श्रमिकों की योग्यता का मिश्रण था। इसने स्थानीय और क्षेत्रीय सांस्कृतिक परम्पराओं और भिन्न-भिन्न समय की सामाजिक, आर्थिक, संपन्नता, धार्मिक क्रियाकलाप को भी शामिल किया। वास्तुकला का अध्ययन हमें सांस्कृतिक विविधताओं के विषय में बताता है और भारत की संपन्न परंपराओं को समझने में हमारी मदद करता है।

## 8.2 हड़प्पा काल

पर्यटकों के लिए भ्रमण एवं अध्ययन करने का सबसे रोचक स्थान सिंधु घाटी की सभ्यता है जिसके कुछ भाग भारत में पाए जाते हैं। सिंधु घाटी सभ्यता के हड़प्पा और मोहनजोदड़ों एवं अन्य स्थानों की खुदाई ने बहुत ही आधुनिक शहरी सभ्यता को प्रकट किया जिसमें निपुण नगर योजना और तकनीकी कौशल की जानकारी मिलती है। उन्नत जल निकासी प्रणाली के साथ नियोजित सड़कें और भवन दर्शाते हैं कि ऐसी उच्च संस्कृति भारत में विकसित हुई। जाहिर है कि हड़प्पा के लोग तीन प्रकार की इमारतों, रहने वाले घर, स्तंभित हॉल और सार्वजनिक स्नानागार का निर्माण करते थे। यदि आप पर्यटन को अपना पेशा बनाना चाहते है, तो आपको कुछ तथ्यों की जानकारी होना आवश्यक है ताकि आप पर्यटकों का मार्गदर्शन कर सकें।

हड़पा वास्तुकला की मुख्य विशेषताएँ उनकी उच्च दर्जे की नगर योजना कौशल है जो स्पष्टतया ज्यामितीय आकार अथवा ग्रीड की रूपरेखा में बनाए गए थे। सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं और बड़े नियोजित तरीके से बनाई गई थीं। सिंधु घाटी में अधिवासों को नदी किनारे बनाया गया था जिन्हें अक्सर भयंकर बाढ़ नष्ट कर देती थी। इन आपदाओं के बावजूद सिंधु घाटी के लोगों ने उसी जगह नये निर्माण किए। इस प्रकार इन परत दर परत बसे अवशेषों का पता यहाँ पर हुई खुदाई से हुआ। सिंधु घाटी सभ्यता का अन्तिम पतन लगभग ईसा से दो

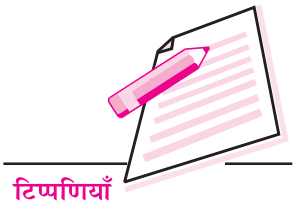



हजार वर्ष पूर्व में हुआ जो आज तक एक रहस्य बना हुआ है। गुजरात में एक जगह लोथल से जहाज बनाने के स्थान (गोदी बाड़ा) अवशेष प्राप्त हुए है जिससे यहाँ पर समुद्री मार्ग से व्यापार होने का पता चलता है।

> अच्छी तरह पकाई हुई ईटों से अनेक पर्तों में गृह निर्माण किया जाता था जो काफी मजबूत होते थे। इनकी मजबूती का पता इसी से चलता है कि पाँच हजार वर्षों के विनाश के बावजूद वे सफलतापूर्वक बची रही हैं।

हड़प्पा वासियों को मूर्तिकला और शिल्प का ज्ञान था। मोहनजोदड़ों से मिली नृत्य करती लड़की की कांसे की मूर्ति विश्व में प्रथम मूर्तिकला का प्रमाण है। एक पुरुष की योग करती हुई मिट्टी की मूर्ति को भी खुदाई से प्राप्त किया गया। खुदाई में सुन्दर व्यक्तिगत गहने, मुलायम पत्थरों से बनी मोहरें जिन पर चित्रों से कुछ व्यक्त किया गया था तथा कूबड़ वाले बैलों की आकृतियाँ और पशुपति गेंडा की मूर्ति भी मिली है।

इसके बाद वैदिक आर्यों का यहाँ आगमन हुआ। ये लोग लकड़ी, बांस और कुशा से बने घरों में रहते थे। आर्य संस्कृति एक ग्रामीण संस्कृति थी। अतः कोई भी यहाँ भव्य इमारतों के उदाहरण नहीं ढूंढ सकता है। ऐसा इसलिए था क्योंकि आर्यों ने शाही महलों के निर्माण के लिए खराब होने वाली सामग्रियों का प्रयोग किया। जैसे लकड़ी जो समय के साथ नष्ट होते गए। वैदिक काल की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता अग्नि वेदी को बनाना था जो उस समय के लोगों के सामाजिक और धार्मिक जीवन का एक अहम हिस्सा थी और आज भी है। अधिकांश हिंदुओं के घरों में विशेषकर शादी समारोह के अवसर पर ये अग्निवेदियाँ महत्वपूर्ण भूमिक अदा करती हैं। जल्दी ही आंगनों और मंडपों में अग्निवेदियों की स्थापना अग्नि के पूजन के लिए हुई जो वास्तुकला की महत्वपूर्ण विशेषता थी। हमें आश्रमों और गुरुकुलों का भी उल्लेख मिलता है। दुर्भाग्य से आज वैदिक काल के ढांचों के अवशेषों को देखा नहीं जा सकता। वास्तुकला के इतिहास में उनका योगदान अपने घरों के निर्माण में लकड़ी के साथ ईंटों और पत्थरों का प्रयोग था।

छठी शताब्दी ईसा पूर्व भारत ने अपने इतिहास के एक महत्वपूर्ण चरण में प्रवेश किया। उस समय दो नवीन धर्मों- जैन और बौद्ध का आविर्भाव हुआ जिसने पूर्व वास्तुकला शैली के विकास में मदद की। बौद्ध स्तूपों का निर्माण उन जगहों पर हुआ जहाँ बुद्ध के अवशेषों को संरक्षित करके रखा गया था। जहाँ-जहाँ बुद्ध से सम्बन्धित प्रमुख घटनाएँ घटी थी वहाँ-वहाँ स्तूपों का निर्माण मिट्टी के बड़े टीलों से किया गया था, जिन्हें बड़ी ही सावधानी से मिट्टी की छोटी ईंटों से चारों तरफ से घेरकर पकाया गया था। एक स्तूप का निर्माण उनकी जन्म स्थली लुम्बिनी में, दूसरा गया में जहाँ बौद्ध वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ था, तीसरा सारनाथ में जहाँ उन्होंने पहला धर्मोपदेश दिया तथा चौथा कुशीनगर में हुआ जहाँ पर उन्हें महापरिनिर्वाण की प्राप्ति हुई।

बुद्ध के समाधि स्थल पर टीले और बुद्ध के जीवन की मुख्य घटनाओं के स्थल पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गए क्योंकि ये देश के अतिमहत्वपूर्ण स्थापत्य कलाओं में से एक हैं। बौद्धविहार और वाचनालय, शिक्षा एवं शिक्षा ग्रहण करने के लिए बौद्ध भिक्षु और भिक्षुणियों के लिए महत्वपूर्ण बन गए। केंद्रों की स्थापना इन स्थानों पर हुई। आम जनता और संन्यासियों के लिए शिक्षण और पारस्परिक व्यवहार हेतु सम्मेलन कक्षों की भी स्थापना की गई।

अब से धर्म ने वास्तुकला को प्रभावित करना आरंभ कर दिया। जब बौद्धों और जैनियों ने स्तूपों, विहारों और चैत्यों का निर्माण शुरू किया, तब प्रथम मंदिर निर्माण वास्तुकला गुप्त काल में हुई। यह ज्ञान आपको पर्यटक के रूप में इनके महत्व को समझने में सहायक होगा।

## पाठगत प्रश्न 8.1

1. भारतीय वास्तुकला के क्रमिक विकास से आप क्या समझते हैं?
2. हड़प्पा वासियों ने अपनी सभ्यता की रक्षा कैसी की?
3. हड़प्पा लोगों का तकनीकी कौशल किस प्रकार दिखायी देता था?
4. भारत में प्रथम मंदिर की स्थापना कब हुई?

## 8.3 प्रारंभिक ऐतिहासिक काल

मौर्य काल (322-182 ई.पू.) में, विशेषकर अशोक के काल में वास्तुकला में काफी प्रगति हुई। मौर्य कालीन कला और वास्तुकला में फारसी और यूनानी प्रभाव की झलक दिखायी पड़ती है। अशोक के शासन काल में कई विशाल शिलाओं की स्थापना की गई जिनपर 'धम्म' की शिक्षाओं को उकेरा गया। सबसे महत्वपूर्ण खंभों जिनपर जानवरों की आकृतियाँ बनी थी अपने आप में अद्भूत और शानदार हैं। सारनाथ के अशोक स्तंभ को भारतीय गणराज्य ने राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में स्वीकार किया है। प्रत्येक शिला का वजन लगभग 50 टन और ऊँचाई 50 फीट है।

चित्र 8.1: बौद्ध का साँची स्तूप

साँची और सारनाथ स्तूप मौर्य वास्तुकला की उपलब्धियों के प्रतीक हैं। साँची स्तूप के दरवाजों पर चित्रित सुन्दर दृश्यों को जातक कथाओं से लिया गया है जो वास्तुकारों के कौशल और सौंदर्य बोध का नमूना है। (चत्र 8.1)

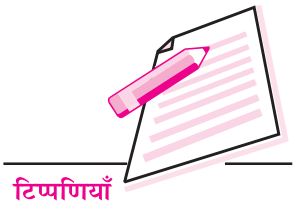


यूनानी और भारतीय कला के मिश्रण से गंधार कला का विकास हुआ जो बाद में विकसित हुई। बुद्ध और बोधिसत्व के सजीव चित्रों वाली मूतियों को यूनानी देवता की तरह पत्थर, टेरीकोटा, सीमेंट और चिकनी मिट्टी से बनाया गया था।

चित्र 8.2

चित्र 8.3: नागार्जुनकोंडा

## नागार्जुनकोंडा

नागार्जुनकोंडा एक और अन्य स्थान है जो बौद्ध वास्तुकला के लिए विख्यात है। गुप्त काल को हिंदू मंदिरों के निर्माण का उद्भव काल माना जाता है। इसका उदाहरण देवगढ़ (झांसी जिला) का मंदिर है। जिसमें एक केन्द्रीय गुफा अथवा गर्भगृह है जहाँ पर देवी की मूर्ति रखी गयी थी। दूसरा मंदिर भीतरगांव (कानपुर जिले) मे है ये दोनो इस काल के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। (चित्र 8.2 तथा 8.3)

## गुफा वास्तुकला

गुफा वास्तुकला का विकास भारतीय वास्तुकला के इतिहास की एक अन्य अनोखी विशेषता है। यह भारतीय वास्तुकला के इतिहास का एक महत्वपूर्ण चरण है। द्वितीय शताब्दी से लेकर 10वीं शताब्दी के मध्य हुई खुदाई में हजारों गुफाओं का पता चला है। इन गुफाओं में महाराष्ट्र की अजन्ता और एलोरा की गुफाएँ और मध्यप्रदेश के विदिशा की उदयगिरी गुफा प्रसिद्ध है। इन गुफाओं में बौद्ध विहार, चैत्य के साथ-साथ मंडप और हिंदू देवी देवताओं के खंभों से बने मंदिर हैं।

चित्र 8.4: महाबलीपुरम में स्मारकों का समूह

## चट्टान काटकर बनाए गए मंदिर

ईसा युग के प्रारंभिक काल में पश्चिमी दक्कन भाग में चट्टान काटकर बनाये गए मंदिरों के प्राचीन अवशेष खुदाई में प्राप्त किए गए। कार्ले के चैत्य में सुन्दर बड़े कमरें, सुसज्जित दीवारें मिलीं जो चट्टान काटकर बनाए गए मंदिरों का अद्भुत उदाहरण है। राष्ट्रकुटों द्वारा एलोरा में निर्मित कैलाश मंदिर और पल्लवों द्वारा महाबलीपुरम में बनवाया गया 'रथ' मंदिर चट्टान काटकर बनाये गये मंदिरों के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। संभवतया चट्टानों के स्थायित्व और शाश्वत रूप से अडिग खड़े ये मंदिर कला की चाहत रखने वाले एवं गृह निर्माताओं को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। (चित्र 8.4)

## स्वतंत्र रूप से खड़े मंदिर

गुप्त काल में शुरू हुई मंदिर निर्माण की गतिविधियाँ पश्चातवर्ती कालों में निरंतर प्रगति करती रही। दक्षिण भारत में पल्लव, चोल, पाड्य, होयसाल तथा बाद में विजयनगर साम्राज्य के शासक महान मंदिरों के निर्माता थे। पल्लव शासकों ने महाबलीपुरम में तट मंदिर बनवाया। पल्लवों ने काँचीपुरम में अन्य संरचना वाले कैलाशनाथ मंदिर और वैकुण्ठ पेरूमल मंदिरों का निर्माण करवाया।

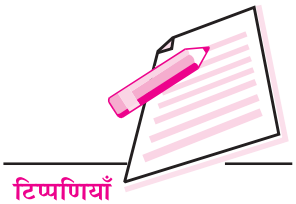



चोलों ने कई मंदिरों का निर्माण करवाया जिनमें तंजौर में स्थित वृह्देश्वर मंदिर सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। चोलों ने दक्षिण भारत में मंदिर वास्तुकला की नवीन शैली जिसे द्रविड़ शैली कहा गया को विकसित किया। इसमें विमान अथवा शिखर, ऊँची दीवारें तथा एक वृहत दरवाजा जिसपर गौपुरम था, को विकसित किया। शानदार मंदिरों को बेलूर में बनवाया गया। जहाँ पत्थरों पर खुदाई ने अपनी चरम सीमा प्राप्त की।

उत्तर एवं पूर्वी भारत में भी सुन्दर मंदिरों का निर्माण हुआ। इन मंदिरों में जिस शैली का प्रयोग किया गया उन्हें 'नागर' शैली कहा जाता है। इनमें से अधिकांश में शिखर (घुमावदार छत्त) गर्भगृह तथा मंडप थे।

उड़ीसा में कुछ सर्वाधिक सुन्दर मंदिर हैं जैसे गंग शासकों द्वारा बनवाया गया लिंगराज मंदिर, भुवनेश्वर कर मुक्तेश्वर मंदिर तथा पुरी में जगन्नाथ मंदिर। कोणार्क के सूर्य मंदिर का निर्माण पूर्वी गंग शासक नरसिम्ह देव प्रथम ने 13वीं शताब्दी में करवाया था। यह मंदिर सूर्य को समर्पित है जिसका आकार बारह पहियों वाले रथ के समान है।

खजुराहों मंदिर परिसर का निर्माण चन्देल शासकों द्वारा 10वीं और 11वीं शताब्दी के मध्य में मध्य प्रदेश क्षेत्र के बुन्देलखंड में करवाया गया। इनमें सबसे महत्वपूर्ण कन्देरिया महादेव मंदिर है। (चित्र 8.5)

चित्र 8.5: कन्देरिया महादेव मंदिर

राजस्थान के माऊंट आबू में दिलवाड़ा मंदिर है जो जैन तीर्थाकरों को समर्पित हैं। इन मंदिरों का निर्माण शुद्ध सफेद संगमरमर पत्थरों से तथा इन्हें अद्भुत मुर्तिकलाओं से सुसज्जित किया गया था। इनका निर्माण सोलंकी शासकों के संरक्षण में हुआ था।

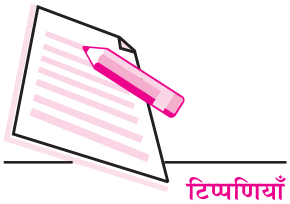

टिप्पणियाँ



गुजरात में सोमनाथ मंदिर, बनारस का विश्वनाथ मंदिर, मथुरा का गोविन्द मंदिर, गुवाहाटी में कामाख्या देवी मंदिर, कश्मीर में शंकराचार्य मंदिर तथा कोलकाता के कालीघाट में स्थित काली मंदिर, ऐसे कुछ महत्वपूर्ण मंदिर हैं जो भारतीय उपमहाद्वीप में मंदिर निर्माण गतिविधियों के साक्ष्य हैं।

### पाठगत प्रश्न 8.2

1. मौर्य वास्तुकला की उपलब्धियों को दर्शाने वाले किन्ही दो स्तूपों के नाम लिखें।
2. अशोक साम्राज्य में धम्म शिक्षा को कहाँ पर खुदवाया गया था?
3. भारत में वास्तुकला की कुछ पद्धतियों के नाम लिखिए।
4. उदयगिरि की गुफाएँ कहाँ हैं?
5. एलोरा के कैलाश मंदिर का निर्माण किसने करवाया?
6. महाबलीपुरम के रथ मंदिर का निर्माण किसने करवाया?
7. वास्तुकला की द्रविड़ शैली क्या है?
8. तंजौर में चोल राजा द्वारा बनवाये गए मंदिर का नाम बताइएँ।
9. वास्तुकला की नागर शैली को परिभाषित कीजिए।
10. कोणार्क में सूर्य मंदिर को किसने बनवाया?
11. राजस्थान के माऊंट आबू के प्रसिद्ध जैन मंदिरों का नाम बताएँ।

## 8.4 मध्यकाल में वास्तुकला

### दिल्ली सल्तनत

13वीं शताब्दी में तुर्कों के आगमन के साथ ही भारत में वास्तुकला की एक नवीन शैली – फारसी, अरबी और मध्य एशिया का उद्भव हुआ। इन इमारतों की यांत्रिक विशेषता – गुम्बद, मेहराब, और मीनारें थीं। शासकों द्वारा बनवाये गए महलों, मस्जिदों और कब्रों की अपनी विशेषताएँ थीं जिनमें स्वदेशी वास्तुकला को मिश्रित कर वास्तुकला की एक नवीन संश्लेषण विधि को प्राप्त किया गया था। ऐसा इसिलए हुआ क्योंकि दिल्ली के तुर्क शासकों ने यहाँ के स्थानीय शिल्पकारों जो अपने काम में बहुत निपुण थे और जिन्होंने पहले भी सुन्दर इमारतों का निर्माण किया था की सेवाओं को अपने लिए प्रयुक्त किया। परिणामस्वरूप जिन इमारतों को बनाया गया उनपर इस्लाम संरचना के साथ-साथ स्थानीय रूपरेखा और शिल्पकारी भी साफ़ दिखाई देती है। उनकी रूपरेखा में मध्यमार्ग को अपनाया गया जिसमें इस्लाम और स्थानीय शैलियों का मिश्रण देखने को मिलता है।

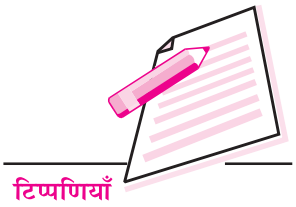

चित्र 8.6: कुतुबमीनार दिल्ली

इस समय की सबसे पहली इमारत दिल्ली में एक मस्जिद और कुतुबमीनार है। कुतुबमीनार एक लाट या मीनार है जिसकी ऊँचाई 70 फीट है। यह एक तंग लाट है जिसमें पांच तल हैं। मस्जिद और लाट दोनों पर सुन्दर लिखावट उत्कीर्ण की गई है। सुल्तानों ने बाद में भी कई सुन्दर इमारतों का निर्माण करवाया। अलाउद्दीन खिलजी ने कुवत-उल-इस्लाम मस्जिद का आकार बढ़वाकर इसके अहाते में एक वृहत दरवाजे को बनवाया। इस वृहद दरवाजे को अलाई दरवाजा कहा जाता है जो एक सुन्दर वस्तुकला की रूपरेखा को दर्शाता है। इस इमारत की सुन्दरता बढ़ाने के लिए इसमें सजावटी पदार्थों का प्रयोग किया गया था। उसने दिल्ली में हौजखास का भी निर्माण करवाया था जो द्रवचालित संरचना थी। मोहम्मद तुलगक, फिरोज तुगलक की कब्रें तथा तुगलकाबाद का किला इसके कुछ उदाहरण हैं। यद्यपि इनकी इमारतें सुंदर नहीं थी, लेकिन इनमें मजबूत दीवारें थी जो विशाल और आकर्षक थी। अफगान शासन के समय दिल्ली में इब्राहिम लोधी की कब्र तथा सासाराम में शेरशाह की कब्र बनवाई गई थी। इस काल की वास्तुकला शैली यह दर्शाती है कि किस प्रकार से स्थानीय शैली को अपनाया गया और उन्हें कैसे प्रयुक्त किया गया। इस समय के दौरान तुर्क यहाँ पर बसने की प्रक्रिया में लगे हुए थे। यहाँ के शासकों को मंगोलों से धमकियाँ मिल रही थी जिन्होंने उत्तर में अचानक आक्रमण कर दिया था। इसी कारण इस समय बनायी गई इमारतें मजबूत, दृढ़ और उपयोगी थी।

## क्षेत्रीय साम्राज्य

बंगाल, गुजरात और दक्कन में क्षेत्रीय साम्राज्यों की स्थापना के साथ सुन्दर इमारतें जिनकी अपनी शैलीयाँ थी को बनाया गया। जामा मस्जिद, सादी सैयद मस्जिद और अहमदाबाद का हिलता टॉवर इस वास्तुकला के उदाहरण हैं। मध्य भारत के मांडू में जामा मस्जिद, हिंडोला महल तथा जहाज महल का निर्माण किया गया। दक्कन में सुल्तानों ने बहुत सी इमारतों का निर्माण कराया। गुलबर्ग स्थित जामा मस्जिद, बीदर में महमूद गवन का मदरसा, इब्राहिम रौजा, बीजापुर का गोल-गुम्बज

तथा गोलकुंडा का किला कुछ प्रसिद्ध इमारतें हैं। गोल-गुम्बज में विश्व की सबसे बड़ी गुम्बद है। इन सभी इमारतों का प्रारूप एवं शैली उत्तर भारत की इमारतों से भिन्न हैं। बंगाल में कई ढांचों की आयताकार शैली और छतों की अजीब शैली क्षेत्रीय वास्तुकला की महत्वपूर्ण विशेषता है, जैसे बंगाल में अदीना मस्जिद और पडुंआ में जलाल-उ-दीन की कब्र, खिल दरवाजा तथा गौर में तंतीपरा मस्जिद। जौनपुर में शराकी शासकों द्वारा निर्मित अटाला मस्जिद में विशाल स्क्रीन है जो गुम्बद को ढ़के हुए हैं, जबकि मालवा में होशंगशाह की कब्र पूर्ण रूप से संगमरमर से बनी है, जिसमें पीले और काले मार्बल को सुन्दरता से शिल्पकारों ने जड़ा है। विजयनगर जो इस दौरान स्थापित हुआ था, के शासकों ने भी अनेक सुन्दर इमारतों और मंदिरों का निर्माण करवाया। यद्यपि आज केवल उनके अवशेष ही बचे हैं फिर भी हम्पी में विथालस्वामी और हजर रमा के मंदिर इसके अच्छे उदाहरण हैं।

## मुगल

मुगलों के आगमन के साथ वास्तुकला के एक नवीन युग की शुरुआत हुई। शैली का संश्लेषण जिसकी शुरूआत पहले ही हो गयी थी, इस समय अपने चरम पर थी। मुगल वास्तुकला का आरम्भ अकबर के शासन के दौरान हुआ। दिल्ली में हुमायूँ का मकबरा मुगल वास्तुकला की उत्कृष्ट कृति है। इस शानदार इमारत में लाल पत्थरों का प्रयोग किया गया था। इसका एक मुख्य दरवाज है और मकबरा बगीचे के बीचो-बीच बना है। कई इतिहासविद् इसे ताजमहल के पूर्व की कृति मानते हैं। अकबर ने आगरा और फतेहपुर सीकरी में किले बनवाये। बुलंद दरवाजा मुगल साम्राज्य की भव्यता को दर्शाता है। इस इमारत का निर्माण अकबर की गुजरात विजय के बाद कराया गया था। बुलंद दरवाजा की मेहराब 41 मीटर ऊँची है और संभवत: यह विश्व का सबसे ऊँचा मुख्य दरवाजा है। सलीम चिश्ती की दरगाह, जोधाबाई का महल, इबादत खाना बीरबल का घर तथा फतेहपुर सीकरी में अन्य इमारतें फारसी एवं भारतीय वास्तुकला का संश्लेषण प्रस्तुत करती

चित्र 8.7: आगरा का किला

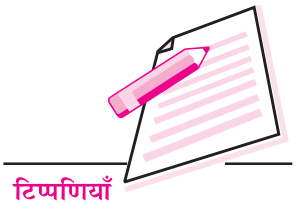



हैं। जहाँगीर के शासन के दौरान अकबर की समाधि आगरा के समीप सिकंदरा में बनवाई गयी थी। उसने इतिमाद-उद-दौला का सुंदर मकबरा भी बनवाया जो पूर्णतया संगमरमर से बना था। मुगल शासकों में शाहजहाँ सबसे महान इमारत रचनाकार था। उसने सबसे ज़्यादा संगमरमर का प्रयोग किया। पत्थरों पर जड़ाई का सुन्दर काम (जिसे पीएटर डूरो कहा जाता है), सुन्दर मेहराब तथा मीनारें उसकी इमारतों की विशेषताएँ थी। दिल्ली का लाल किला और जामा मस्जिद तथा सबसे ऊपर ताजमहल शाहजहाँ द्वारा बनवाई गई कुछ इमारतें हैं। शाहजहाँ की पत्नी मुमताज महल का मकबरा ताजमहल संगमरमर से बना है जो वास्तुकला की उन सभी विशेषताओं को दर्शाता है जो मुगल काल में विकसित हुई। इसमें एक केन्द्रीय गुम्बद है, चार सुन्दर मीनारें हैं, एक मुख्य द्वार, पत्थरों पर उत्कीर्ण सुन्दर कार्य तथा इसे चारों ओर से घेरे हुए बगीचा है। मुगल काल के बाद वाले काल पर मुगल वास्तुकला का अहम प्रभाव था। इमारतें प्राचीन भारतीय शैलियों के मजबूत और अत्यधिक प्रभाव को दर्शाती हैं जिनमें आंगन और ऊँचे खंभे थे। इसी शैली के वास्तुकला में प्रथम बार सजीव - हाथी, शेर, मोर तथा अन्य पक्षियों को कोष्ठकों में बनवाया गया था।

मुगल कालीन वास्तुकला में एक अद्वितीय विकास हुआ। इस समय मकबरों और अन्य इमारतों के चारों ओर सुंदर बगीचों का निर्माण किया गया था। कश्मीर और लाहौर में शालीमार बाग का निर्माण जहांगीर और शाहजहाँ ने करवाया। मुगलों ने भारतीय संस्कृति और वास्तुकला के विकास को प्रोत्साहित किया।

### पाठगत प्रश्न 8.3

1. तुर्कों की वास्तुकला शैली क्या थी?
2. सल्तनत काल में बनाए गए कुछ मकबरों और मस्जिदों के नाम बताएँ।
3. विश्व का सबसे ऊँचा गुम्बद कौन-सा हैं?
4. पिएटरा ड्यूरा क्या है?
5. शक्तिशाली मुगल साम्राज्य की भव्यता को कौन-सी इमारत दर्शाती है?

## 8.5 औपनिवेशिक वास्तुकला तथा आधुनिक काल

भारत में अगला आगमन अंग्रेजों का था जिन्होंने यहाँ पर 200 वर्षों तक शासन किया तथा औपनिवेशिक वास्तुकला की विरासत अपनी बनाई गई इमारतों के रूप में छोड़कर गए।

कुछ महत्वपूर्ण यूरोपीय जो छठी शताब्दी में यहाँ आना शुरू हुए, उन्होंने कई गिरजाघरों और अन्य इमारतों का निर्माण करवाया। पुर्तगालियों ने कई गिरजाघरों का निर्माण गोवा में करवाया। इनमें सबसे प्रसिद्ध बेसिलका वोम जीसस और सेंट फ्रांसिस के गिरजाघर हैं। अंग्रेजों ने भी प्रशासनिक और आवासीय परिसरों का निर्माण करवाया जो उनके शाही अंदाज को व्यक्त करता है। औपनिवेशिक भवन निर्माण कला में कुछ यूनानी और रोमन प्रभाव को देखा जा सकता है। दिल्ली

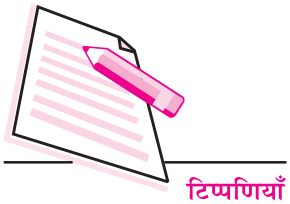

टिप्पणियाँ



में संसद भवन और कनॉट प्लेस इसके अच्छे उदाहरण हैं। वास्तुविद लुटियन ने राष्ट्रपति भवन का नक्शा बनाया था जो अंग्रेजी शासन काल में वायसराय का आवास होता था। यह बलुआ पत्थर से बनाया गया है जिसमें कनोपी (छतरी) और राजस्थानी डिजाइन की जालियाँ लगाई गई हैं। कोलकाता जो अंग्रेजों की राजधानी हुआ करती थी में विक्टोरिया स्मारक संगमरमर की एक भव्य इमारत है। अब यह औपनिवेशिक अंग्रेजी सामान का अजायबघर है। कोलकाता में लेखकों की इमारत (रायटर्स बिल्डिंग) पर सरकारी अधिकारियों की पीढ़ियाँ अंग्रेजी शासन में काम करती थी, आज भी बंगाल का प्रशासनिक केन्द्र है। कुछ मध्ययुगीन तत्वों को गिरजाघर की इमारतों जैसे कोलकाता के सेन्ट पोल केथडरल में देखे जा सकते हैं। अंग्रेज अपने पीछे आकर्षक रेलवे स्टेशनों जैसे मुम्बई में विक्टोरिया स्टेशन को छोड़कर गये। 1947 में स्वतंत्रता के पश्चात इमारतों की समकालीन शैली अब उसका साक्ष्य हैं। चंडीगढ़ में इमारतों की रूप-रेखा फ्रांसिसी वास्तुविद ले कोरबसीअर ने की थी। दिल्ली में आस्ट्रियन वास्तुविद स्टेन ने भारत अंतरराष्ट्रीय केन्द्र जहाँ पर विश्व के जाने माने प्रबुद्ध लोगों के सम्मेलन होते हैं, रचना की थी। हाल ही में यहाँ पर देश विदेश के बौद्धिक संपदा के घनी व्यक्तियों ने मंत्रणा की। इंडिया हेबीटेट सेन्टर राजधानी में बौद्धिक गतिविधियों का केन्द्र है।

विगत कुछ दर्शकों में कुछ भारतीय प्रतिभावान वास्तुविदों का प्रादुर्भाव हुआ है। इनमें से कुछ प्रीमियर स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर से जो स्कूल ऑफ प्लानिंग एण्ड आर्कीटेक्चर, दिल्ली से प्रशिक्षित हैं। वास्तुविद राज रेवल और चार्ल्स कोरिया इस नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं। राज रेवल दिल्ली में स्कोप परिसर का तथा जवाहर व्यापार भवन का डिजाइन तैयार किया है। उन्होंने स्थानीय इमारत सामग्री बलुआ पत्थर की भवन निर्माण के रूप में प्रयोग में लिया है जिसपर वह गर्व करते हैं। उन्होंने इसमें रोम के चौक की तरह सीढ़ियाँ और खुले स्थानों का मिश्रण किया है। पिछले दशक से घरेलू वास्तुकला में सभी महानगरीय शहरों में हाउसिंग सहकारी समितियाँ जगह-जगह बन गई हैं जिनमें उपयोगिता और योजनाबद्ध तरह से सौंदर्य बोध का मिश्रण है।

## पाठगत प्रश्न 8.4

1. पुर्तगाली लोगों द्वारा बनवाए गए प्रसिद्ध गिरजाघर कौन से थे?
2. राष्ट्रपति भवन का डिजाइन तैयार करने वाले वास्तुविद का नाम बताइए।
3. भारत में अंग्रेजी साम्राज्य के दौरान भवन निर्माण की कौन-सी शैली दिखाई देती हैं?
4. आजकल कोलकाता स्थित विक्टोरिया मेमोरियल इमारत में क्या रखा गया हैं?
5. चण्डीगढ़ शहर का डिजाइन किसने बनाया था?
6. उस वास्तुविद का नाम बताएँ जिसने दिल्ली में भारत अंतरराष्ट्रीय केन्द्र का डिजाइन तैयार किया।
7. आधुनिक भारत के प्रसिद्ध वास्तुविदों के नाम बताएँ।

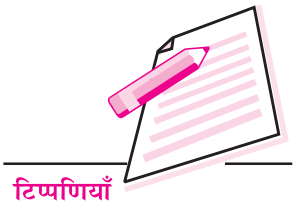



## 8.6 भारत में नगर और शहर

इस पाठ में आपने भारत के प्रचीन, मध्यकाल एवं आधुनिक काल की वास्तुकलाओं के विषय में पढ़ा है। पिछले खण्ड में आपने दिल्ली में स्थित योजना एवं वास्तुकला स्कूल के विषय में भी पढ़ा है। आपने देखा कि योजना वास्तुकला के साथ-साथ चली। क्या आप जानते हैं कि योजना वास्तव में नगर योजना है जोकि शहरी विकास से जुड़ी हैं। यह स्पष्ट है कि हम जब भी वास्तुकला के विषय में सोचते हैं अथवा बात करते हैं, हमें नगर योजना अथवा शहरी विकास के लिए इससे संबंधित विचारों को सोचना पड़ता है। इस खण्ड में हम भारत में नगरों एवं शहरों में वृद्धि और विकास के विषय में पढ़ेंगे। यह वास्तव में एक रोचक कथा है। हम भारत के समकालीन महानगरों चेन्नई, मुम्बई, कोलकाता तथा दिल्ली शहरों को जानने हेतु कुछ समय व्यतीत करेंगे। हम इन शहरों के उद्‌भव का पता लगाने का प्रयास करेंगे तथा उनकी इमारतों के महत्वपूर्ण ढांचों के विषय में भी सीखेंगे।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हड़प्पा सभ्यता से शुरू होकर भारत की नगर योजना का एक लंबा इतिहास रहा है जिसे 2350 ई.पू. से जाना जा सकता है। जैसा कि आप पहले से ही जानते हैं कि हड़प्पा और मोहनजोदड़ो दोनों शहरों में विकसित जल निकासी, समकोण पर काटने वाली सड़कें, उच्च स्थान पर बना एक किला और जिसके निचले भाग पर बाकी सारी जनता रहती थी। राजस्थान के कालीबंगा और कच्छ में स्थित सुरकोटड़ा की भी सभ्यताएँ समान ही थी। वर्ष 600 ई.पू. के आगे हमें उन नगरों एवं शहरों के विषय में भी पता चलता है जो आर्यों एवं द्रविड़ों की संस्कृति से संबंधित थी। ये राजगीर, वाराणसी, अयोध्या, हस्तिनापुर, उज्जैन, श्रावस्ती, कपिलवस्तु तथा कौशाम्बी थे। हमें मौर्यकाल के कई नगरों जिन्हें जनपद (छोटे नगर) और महाजनपद (बड़े नगर) कहा जाता था।

मुसलमानों के भारत में आने के साथ, दृश्य में परिवर्तन शुरू हो गया। नगरों में इस्लाम के प्रभाव को देखा जा सकता है। मस्जिद, किले और महल अब शहरी दृश्यों में देखे जा सकते थे। अबुल फजल के मतानुसार 1594 ई. में नगरों की संख्या 2837 थी। ऐसा इसिलए था क्योंकि कई बड़े गांवों को छोटे नगरों में बदल दिया गया था जिन्हें कस्बा कहा जाता था। इन कस्बों पर शीघ्र ही स्थानीय शिल्पकारों का कब्जा हो गया जिन्होंने अपनी विशेष कला पर काम करना शुरू कर दिया जैसे- आगरा में चमड़े और संगमरमर का कार्य। सिंध में सूती कपड़ों तथा रेशम के वस्त्रों में विशिष्टता थी। जबकि गुजरात को स्वर्ण और रेशम के धागे बनाने के कार्य में विशिष्टता हासिल थी। जरी को निर्मित कर अन्य देशों को निर्यात किया जाता था।

बाद में 16वीं शताब्दी के दौरान समुद्री मार्ग से यूरोप के लोगों का आगमन हुआ जिससे बंदरगाह शहरों की स्थापना हुई जैसे गोवा में, पणजी (1510), महाराष्ट्र में मुम्बई (1532) तथा दक्षिण में मछलीपट्टनम (1605), नागपट्टनम (1658) मद्रास (1639) तथा पूर्व में कोलकाता (1690)। अंग्रेजों ने इन बंदरगाह शहरों का निर्माण क्यों किया इसका मुख्य कारण उस समय इंगलैंड विश्व में औद्योगिक अर्थव्यवस्था में शीर्ष पर था, जबकि भारत ब्रिटिश उद्योगों के लिए कच्चा माल आपूर्ति करने एवं निर्मित सामानों को खरीदने वाला बड़ा खरीददार था। 1853 के पश्चात अंग्रेजों ने देश के अन्दरूनी भागों से सामान को बंदरगाहों तक पहुँचाने के लिए रेल पटरियों को बिछाना

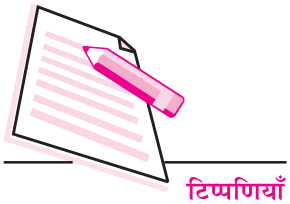

टिप्पणियाँ



शुरू कर दिया था, जो उन क्षेत्रों को मिलाती थी जो कच्चे माल की आपूर्ति और तैयार माल को प्राप्त करने में सहायक थी। 1905 तक लगभग 2800 मील लंबी रेल पटरियों को बिछा दिया गया था जो ब्रिटिश अर्थव्यवस्था तथा उसके राजनीतिक एवं सैनिक हितों के लिए लाभदायक था। संप्रेषण उद्देश्यों के लिए डाक एवं तार की लाइनों को भी बिछा दिया गया।

20वीं शताब्दी के आरम्भ में बंबई (मुंबई), कलकत्ता (कोलकाता), मद्रास (चेन्नई) प्रशासन, व्यापार एवं उद्योगों के प्रमुख केन्द्र बन गए थे। कुछ स्थान जैसे कलकत्ता का डलहौजी चौराहा, मद्रास का सेन्ट जॉर्ज किला, दिल्ली में कनॉट प्लेस तथा मुंबई का मरीन ड्राइव का समुद्र तट यूरोपवासियों को उनके गृहनगरों की याद दिलाता था। वे अपने कब्जे वाले स्थानों के वातावरण की शीतलता को भी चाहते थे जैसा उन्हें यूरोप में प्राप्त था। अत: इन बड़े शहरों के निकट पर्वतीय नगरों की स्थापना की गई जिससे भारत की झूलसती गर्मी से बचा जा सके जैसे उत्तर में मसूरी, शिमला और नैनीताल, पूर्व में दार्जलिंग तथा शिलोंग तथा दक्षिण में नीलगिरी तथा कोडाइकनाल।

नगरों में नये आवासीय क्षेत्रों जैसे सिविल लाईन्स तथा कैंटोनमेंट की स्थापना की गई। जिस जगह पर नागरिक प्रशासनिक अधिकारी रहते थे उसे सिविल लाइन्स तथा ब्रिटिश सेना अधिकारियों के आवास को कैंटोनमेंट क्षेत्र कहा जाता था। क्या आप जानते हैं आज भी इन दोनों क्षेत्रों में जाने-माने प्रशासिक और सेना के अधिकारी रहते हैं।

## पाठगत प्रश्न 8.5

1. भारत में प्राचीन काल में स्थापित 5 शहरों के नाम :

   i) ....., ii) ....., iii) .....,

   iv) ....., v) .....

2. अंग्रेजों द्वारा स्थापित 5 बंदरगाहों के नाम :

   i) ....., ii) ....., iii) .....,

   iv) ....., v) .....

3. अंग्रेजों द्वारा बसाये गए 5 हिल स्टेशन (पर्वतीय नगर) :

   i) ....., ii) ....., iii) .....,

   iv) ....., v) .....

4. सिविल लाइन में कौन रहते थे?

5. कैंटोनमेंट का क्या अर्थ था?

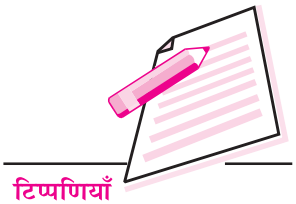



इस खण्ड में भारत के कुछ प्रसिद्ध महलों की सूची दी गई है। यदि आप इनमें से कुछ के विषय में जानकारी प्राप्त करते हों तो इससे आपका अध्ययन रुचिकर होगा। उदाहरण के लिए:

a. इन्हें किसने बनवाया?

b. इन महलों के विषय में बताएँ।

c. आज इन महलों की क्या स्थिति है?

यदि आप पर्यटकों का मार्गदर्शन अथवा पर्यटन संबंधी कोई व्यवसाय खोलना चाहते हैं तो इससे आपको काफी मदद मिलेगी। यदि आप इन स्थानों के विषय में और भी जानना चाहते हैं तो यह आपकी अपनी संस्कृति के बारे में जानने के लिए अच्छा होगा।

## A) भारत में स्थित महल

- खास महल, आगरा का किला, आगरा
- मैसूर महल, मैसूर
- झील महल, उदयपुर
- उमेद भवन महल, उदयपुर
- आगरा किला – मुगलों का आलिशान आवास, आगरा
- ऐना महल – कच्छ शासक का शानदार आवास
- अम्बर महल – पूर्व आलिशान आवास, जयपुर
- अम्बा विलास महल – मैसूर
- बंगलूरू महल – बंगलूरू
- छत्रपति शाहू महल – छत्रपति शहू महराज का आलिशान आवास, कोल्हापुर
- चेलूवम्बा विलास महल – मैसूर
- चौमाहला महल – हैदराबाद
- सिटी पैलेस – उदयपुर – जयपुर के महाराज की गद्दी
- सिटी पैलेस उदयपुर – उदयपुर के महाराणा की गद्दी
- दिल्ली का लाल किला – दिल्ली के मुगल बादशाह की गद्दी
- फलकनुमा महल – हैदराबाद का शाही महल
- फतेहपुर सीकरी – सम्राट अकबर का शाही आवास

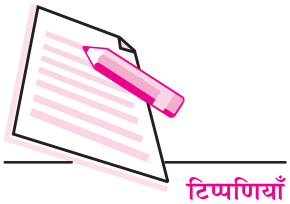

टिप्पणियाँ



- गोहर महल – भोपाल का शाही आवास
- गोरबंध महल – जैसलमेर
- ग्रांड पैलेस श्रीनगर – पूर्व में शाही आवास, आज श्रीनगर होटल
- हवा महल पूर्व में शाही आवास, जयपुर
- हिल पैलेस, भिपुनिथरा, कोचीन – कोचीन के महाराजा का पूर्व शाही आवास, अब भारत का सबसे बड़ा पुरातत्व अजायबघर
- जगमोहन महल – मैसूर
- जग मंदिर – उदयपुर में शाहजहाँ का शाही आवास
- जग निवास – (झील महल) उदयपुर में शाही आवास
- जल महल – पूर्व में शाही आवास, अब होटल, जयपुर
- जया लक्ष्मी विलास पैलेस – मैसूर
- जय विलास महल – ग्वालियर के महाराजा की गद्दी
- जैसलमेर फोर्ट – जैसलमेर के महाराजा की गद्दी
- करणजी विलास महल – मैसूर
- कांगड़ा फोर्ट – कांगड़ा के महाराजा की गद्दी
- खासबाग महल – रामपुर के महाराजा का महल
- किंग कोठी पैलेस – निजाम सप्तम उस्मान अली खान का महल
- कोदिआर पैलेस – त्रावणकोर परिवार का शाही आवास
- लालगढ़ महल – पूर्व में शाही आवास आज होटल, बीकानेर
- लक्ष्मी विलास महल – बड़ोदा के महाराज की गद्दी
- लक्ष्मीपुरम महल – केरल
- ललिथ महल पैलेस – मैसूर
- लोकरंजन महल – मैसूर
- मार्बल पैलेस – कोलकाता
- मट्टनचेरी पैलेस – (डच पैलेस), कोचीन – कोचीन के महाराजा का पूर्व शाही आवास, वर्तमान में पुरातत्व अजायबघर

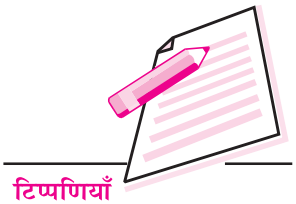



- नारायण निवास महल – पूर्व में शाही आवास, आज जयपुर में एक होटल
- न्यू पैलेस – कोल्हापुर के महाराजा की गद्दी
- पदमनाभापुरम महल – त्रावणकोर के महाराजा की गद्दी
- प्राग महल – कच्छ के शासकों का शाही महल
- पुरानी हवेली – हैदराबाद के निजाम की गद्दी
- राजेन्द्र विलास पैलेस – मैसूर
- राजमहल पैलेस – पूर्व में शाही आवास आज जयपुर में होटल
- राजबरी – कूच बिहार के महाराजा की गद्दी
- रामबाग पैलेस – जयपुर के महाराजा का पूर्व में महल (अब होटल)
- समोद पैलेस – पूर्व में शाही महल अब होटल, जयपुर
- शनिवार वाड़ा – पेशवाओं का शाही आवास, पूणे
- शौकत महल – पूर्व में शाही आवास, भोपाल
- थंजावुर नायक – थंजावुर (तंजौर) नायक महल, थंजावुर
- उम्मेद भवन पैलेस – जोधपुर के महाराजा की गद्दी
- ऊपरकोट फोर्ट – जूनागढ़ के नवाब की गद्दी, गुजरात
- वसंत महल पैलेस – मैसूर
- विजय विलास पैलेस – मांडवी – कच्छ के शासकों का शाही आवास

### B) अजायबघर

अजायबघर संरक्षण का कार्य करते हैं। भारत में अत्यधिक अजयाबघर हैं जो पर्यटकों को अपनी और आकर्षित करते हैं। इसीलिए यहाँ पर अत्यधिक लोकप्रिय और बड़े अजायबघरों के विषय में बताया गया है।

### भारत में शीर्षस्थ अजायबघर

**हवा महल अजायबघर :** यह हवा हमल के अंदर है जो जयपुर में है। इसका निर्माण महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने 1799 में करवाया। इसकी संरचना मधुमक्खी के छत्ते की तरह है। जिसमें खिड़कियो को इस तरह लगाया गया है जिससे महल में वर्षभर हवा आती रहे। यह पवनों के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें छोटी-छोटी हजारों खिड़कियाँ हैं। यदि आप इन्हें बाहर से देखेंगे तो ये

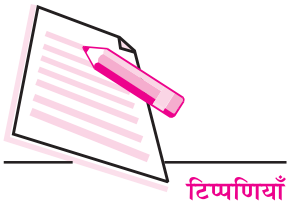

टिप्पणियाँ



मधुमक्खी के छत्तों की तरह दिखाई देंगी। इन्हें महल में इस प्रकार लगाया गया है कि हवा वर्ष भर इसमें आती जाती रहे जिससे महल का तापमान बदलते मौसम के अनुरूप रहे। पाण्डुलिपि दीर्घा, सैनिक सामान की दीर्घा और सिक्कों की दीर्घा इस अजायबघर के आकर्षक का केन्द्र हैं।

**कोलकाता भारतीय अजायबघर** में अनेकों आश्चर्य हैं। इसमें छह खण्ड हैं– पुरातत्व, ऐंथ्रोपोलोजी, भूविज्ञान, जंतुविज्ञान, उद्योग एवं कला। यह इतना बड़ा है कि इस अजायबघर को पूरा देखने में तीन दिन लग जाते हैं।

**जयगढ़ फोर्ट अजायबघर** – राजपूताना और मुगल वास्तुकला की एवं उनके रहन सहन की सुन्दर छाप प्रदान करता है। यह राजस्थानी शासन और संस्कृति की अद्वितीय छटा को प्रस्तुत करता है। कोई भी राजस्थानी राजशाही को न केवल अजायबघर में अपितु यहाँ की रेत में जो राजस्थान की सड़कों को ढ़के हुए हैं में देख सकता है।

**कर्नाटक सरकारी अजायबघर** देश का सबसे पुराना अजायबघर है। यह कर्नाटक विरासत का सबसे अच्छी नुमाइशों में से एक हैं। यह अजायबघर सबसे अच्छे और अद्वितीय उदाहरण को प्रस्तुत करता है।

**महाराजा सवाई सिंह अजायबघर** – यह एक सुंदर और अच्छी तरह से बना संग्रहालय है। इसकी स्थापना 1959 में हुई। यह प्राचीन युग को समकालीन ढ़ंग से चित्रित करता है जिसमें राजसी आभा है।

### राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

यह भारत का सबसे बड़ा संग्रहालय है। इसकी स्थापना 1949 ई. में हुई। इसमें पूर्व एतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल की कला के विविध विलेख हैं। इस संग्रहालय में 200000 कलाकृतियाँ है, जो भारतीय तथा विदेशी है। इसमें 5000 वर्षों के इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है।

इसमें कला इतिहास का राष्ट्रीय संग्रहालय भी है। इसके संरक्षण और म्यूजियोलॉजी की स्थापना 1983 में हुई जो अब वर्ष 1989 से विश्वविद्यालय के रूप में मान ली गई है। इसमें स्नात्कोत्तर स्तर और डॉक्टरेट स्तर पर इतिहास कला, कला संरक्षण और कला नवीनीकरण पाठ्यक्रमों की शिक्षा दी जाती है।

इसमें विविध रचनात्मक परम्पराओं और अनुशासन का प्रर्याप्त मात्रा में संग्रहण है जो विविधता में एकता को प्रस्तुत करता है। इसमें भूत के साथ वर्तमान काल का बेजोड़ मिश्रण है और भविष्य के लिए मजबूत दृष्टिकोण है जो इतिहास को जीवन में शामिल करता है। बौद्ध कला वर्ग में बुद्ध के पवित्र अवशेषों का समावेशन है, जिसका पता पिपरेहवा बस्ती, उत्तर प्रदेश में चला। इस संग्रहण में पुरातत्व, भुजाएँ, कवच, सजावटी कला, गहने, पाण्डुलिपियाँ तथा चित्रकला इत्यादि हैं।

**राष्ट्रीय अभिलेखागार अजायबघर** पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत संस्कृति विभाग का कार्यालय है। इसमें भारत सरकार के पुराने रिकार्डों को सुरक्षित रखा गया है। यहाँ पर रखे गए

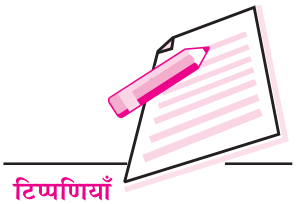



दस्तावेज प्रशासकों और बुद्धिजीवियों के प्रयोग के लिए हैं। लेकिन ये आम जनता को देखने के लिए भी उपलब्ध हैं। इसमें भारत का सबसे प्राचीन अभिलेख हैं जो इतना पुराना है जितना भारत विश्व में है।

**नेहरू मेमोरियल संग्रहालय** जवारलाल नेहरू के जीवन और उनकी जीवन शैली को दर्शाता है। अनुसंधान कार्य में लगे लोगों के लिए यहाँ एक बड़ा पुस्तकालय है।

**लालकिला पुरातत्व संग्रहालय** में मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर की व्यक्तिगत वस्तुएँ जैसे रेशमी वस्त्र और हुक्का यहाँ पर रखा गया है। यहाँ पर तलवारें, बुने हुए गलीचे, शतरंज पट्ट और नक्काशीदार तलवारें भी देखने के लिए रखी गई हैं।

**राष्ट्रीय टिकट संग्रहण अजायबधर** में पुरोन स्टांपों का संग्रहण है जो इसे दिल्ली का एक अनोखा स्थान बनाती है।

**प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय** की स्थापना 20वीं शताब्दी में हुई। अभी हाल ही में इसका नाम छत्रपति शिवाजी महाराज अजायबघर रखा गया है। इसकी स्थापना प्रिंस ऑफ वेल्स के आगमन की स्मृति में कुछ प्रमुख नागरिकों ने भारत सरकार की मदद से की। यह बीत गए युग की कहानी बताता है।

विक्टोरिया टर्मिनल के बाद यह मुम्बई शहर के आकर्षण का दूसरा केन्द्र है।

**स्टेट म्यूजियम ऑफ त्रिपुरा** की स्थापना 1970 अगरतला में हुई। यह विभिन्न उद्देश्यों के लिए एक ही अजायबघर है। इसमें चार दीर्घाएँ हैं जिनके नाम आदिवासी और सांस्कृतिक दीर्घा हैं। चित्रकला तथा फोटो दीर्घाएँ हैं। इसमें सभी कालों की मूर्तिकलाएँ भी हैं। इसकी देखभाल संस्कृति एवं कला निदेशालय करता है।

आओ अब हम भारत के चार महानगरों – चेन्नई, कोलकाता, मुम्बई और दिल्ली के बारे में पढ़ते हैं। आप अवश्य ही इन शहरों के विषय में जानते होंगे।

### 8.6.1 चेन्नई

चेन्नई का पूर्व नाम मद्रास था जो तमिलनाडू राज्य की राजधानी है तथा यह देश के चार महानगरों में से एक है। यह शहर फोर्ट सेन्ट जार्ज के चारो ओर बसा है तथा समय के साथ-साथ इसमें आस-पास के नगर और गांव समाहित हो गए। 19वीं शताब्दी में यह शहर मद्रास प्रेसीडेंसी की गद्दी बन गया। यह भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के दक्षिणी खंड का भाग था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात वर्ष 1947 में यह शहर मद्रास राज्य की राजधानी बना जिसका नाम बदलकर 1968 में तमिलनाडू कर दिया गया। इसने अपनी परम्परागत तमिल हिंदू संस्कृति को बरकरार रखा और यह विदेशी प्रभाव और भारतीय संस्कृति के मिश्रण को उपलब्ध कराने में सफल रहा। चेन्नई में अंग्रेजी प्रभाव का साक्ष्य विभिन्न गिरजाघरों, इमारतों और स्थानों पर विस्तृत रूप से पंक्तियों में लगाए गए पेड़ों से मिलता है।

टिप्पणियाँ



वर्ष 1892 में बनी उच्च न्यायालय की इमारत को विश्व में लंदन न्यायालय के बाद सबसे बड़ा न्यायिक परिसर कहा जाता है। सेंट जार्ज किले की मुख्य पहचान इसके सुन्दर मेहराब और दीर्घाएँ थी जो नवीन वास्तुकला की चमक बिखेरती हैं।

बर्फ घरों का उपयोग उत्तरी अमेरिका ग्रेट लेक्स से बड़े टूकडों में लाई गई बर्फ को भंडारित करने के लिए होता था और औपनिवेशिक काल में वातानुकूलन के उद्देश्य से इन्हें भारत भेजा जाता था।

एक दूसरी सुन्दर संरचना जो इस समय बनी सेंट जॉन चर्च था। इसमें विस्तृत प्राचीन मेहराबें और सुन्दर रंगीन कांच की खिड़कियाँ थी। इसमें मध्यनाभि, गलियारे, एक मीनार और रास्ते थे। एक गुम्बद और सर्पिल आकार की सीढ़ीयाँ थी। इसकी दीवारें मलबे से बनाई गई थी। जो सामने से कुर्ला बफ स्टोन से बनी थी जबकि घट, मेहराबें और ट्रेसिंग पोरबंदर पत्थर से निर्मित थी। इसकी छतें सागवान की लकड़ी से बनी थी तथा फर्श पर टाइलें इंग्लैंड से आयातित थी। (चित्र 8.8)

चित्र 8.8: सेंट जॉन गिरजाघर

एक अन्य संरचना जो इस समय बनी बड़ा डाकखाना था। इसका निर्माण 1872 में पूर्ण हुआ। इस डाकखाने में एक बड़ा केन्द्रीय कक्ष है जिसका एक बहुत ऊँचा गुम्बद है। यह स्थानीय बेसाल्ट में बनाया गया था जिसे सजावटी तौर पर कुर्ला के पीले पत्थरों और धरंगादरा के सफेद पत्थरों से निर्मित किया गया था। यह पर्यटकों के आकर्षण का एक प्रमुख केन्द्र है। अंदर बनी एक मेज है जिसके ऊपर संगमरमर लगा है। जिसकी छत ऊँची है तथा सीढ़ियों का आकार अंग्रेजों की शान और शौकत को दर्शाती है। (चित्र 8.9)

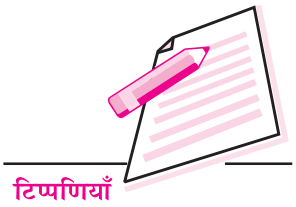

चित्र 8.9: पोस्ट ऑफिस

### 8.6.2 कोलकाता

कोलकाता के उद्भव और इतिहास के बारे में जानना रोचक है। क्या आप जानते हैं कि यह 1911 तक अंग्रेजी शासन की राजधानी थी। इसकी स्थापना कोलकाता के रूप में वर्ष 1686 में हुई जो भारत में अंग्रेजी साम्राज्य प्रसार का एक कारण था। इस शहर का विकास 1756 तक चला जब बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला ने अंग्रेजों पर आक्रमण कर उन्हें यहाँ से खदेड़ दिया। 1757 में प्लासी का युद्ध हुआ जिसमें रॉबर्ट क्लाइव के नेतृत्व में अंग्रेजों ने नवाब को हराकर फिर से कोलकाता पर अधिकार स्थापित किया।

चित्र 8.10: कोलकाता में सर्वोच्च न्यायालय

1774 में कोलकाता में सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना हुई और यह न्याय की गद्दी बना (चित्र 8.10)। वर्ष 1911 मं अंग्रेजों ने राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित की। आप यह जानते होंगे कि वर्ष 2001 में कलकत्ता के स्थान पर आधिकारिक रूप से इसका नाम कोलकाता कर दिया गया। आओ अब हम कोलकाता की उन सुंदर इमारतों को देखें जो आज भी मौजूद हैं।

टिप्पणियाँ



हावड़ा ब्रिज हुगली नदी पर बना है। यह हावड़ा को कोलकाता से जोड़ता है। यह 270 फीट ऊँचे दो खंभों पर खडा है तथा जिसे किसी भी प्रकार के नट और बोल्ट का उपयोग किए बिना बनाया गया है। यह ब्रिज कोलकाता का मुख्य प्रतीक है। यह विश्व में सबसे ज़्यादा व्यस्त पूल है। (चित्र 8.11)

चित्र 8.11: हावड़ा ब्रिज

उत्तरी कोलकाता में स्थित **मार्बल पैलेस** का निर्माण 1835 में हुआ। इसमें एक अद्भूत कला दीर्घा है। इसमें कला, मूर्तिकला, चित्रकला तथा तेलीय चित्रकारी की वस्तुएँ दर्शायी गई हैं। यहाँ पर एक चिड़ियाघर भी है जहाँ पर आप आज विभिन्न प्रकार के पक्षी और जानवरों को देख सकते हैं। वास्तव में यहाँ पर दूर्लभ प्रजाति के पक्षियों का संग्रह है।

चित्र 8.12: फोर्ट विलियम

फोर्ट विलियम हुगली नदी के किनारे स्थित है। इसका निर्माण अंग्रेजों ने करवाया था, जिसकी शुरूआत राबर्ट क्लाइव ने 1696 ई. में की थी। यह 1780 ई. में पूर्ण हुआ। फोर्ट विलियम की

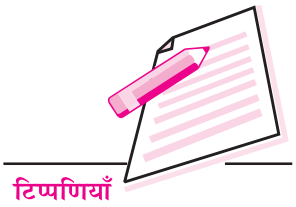



स्थापना का मुख्य कारण आक्रमणकारियों के आक्रमण से रक्षा करना था। फोर्ट विलियम के आस-पास के क्षेत्र को साफ़ किया गया जहाँ आज एक विस्तृत मैदान है जिसमें प्रदर्शनियों और मेलों का आयोजन होता है (चित्र 8.12)

विक्टोरिया मेमोरियल हॉल (चित्र 8.13) कोलकाता में एक प्रसिद्ध अजायबघर है। जिसका निर्माण वर्ष 1921 में हुआ। यह एक अद्भूत स्थान है जो आगंतुकों को विश्व के प्राचीन इतिहास का दर्शन कराता है। आज विक्टोरिया संग्रहालय कोलकाता का सबसे शानदार अजायबघर है। इसकी ऊँचाई 184 फीट है जिसका निर्माण 64 एकड़ भूमि पर हुआ था।

चित्र 8.13: विक्टोरिया मेमोरियल

क्या आप जानते हैं कि ईडन गार्डन क्लब की स्थापना कोलकाता में वर्ष 1864 में हुई। आज इसमें 1,20000 व्यक्ति बैठ सकते हैं। कोलकाता भ्रमण करने वाले भ्रमणकारियों को यह अपनी ओर आकर्षित करता है।

चित्र 8.14: ईडन गार्डन

रॉइटर इमारत का निर्माण 1690 में शुरू हुआ। इसका यह नाम ईस्ट इंडिया कम्पनी के कनिष्ठ लेखकों के आवास स्थान के नाम पर पड़ा। इस प्राचीन संरचना का निर्माण लेफ्टिनेट गर्वनर एशले ईडन (1877) के कार्यकाल में हुआ। (चित्र 8.15)

चित्र 8.15: रॉइटर इमारत

### 8.6.3 मुम्बई

मुम्बई भारत के पश्चिमी तट पर अरब सागर के किनारे स्थित है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि यह एक समय सात द्वीपों का एक समूह था। हालाँकि यह पूर्व ऐतिहासिक काल से यहीं पर अवस्थित है। मुम्बई शहर 17वीं शताब्दी में अंग्रेजों के आगमन की तारीख से है। उस समय इसका नाम बोम्बे था। हालाँकि इसके आकार में सही परिवर्तन 19वीं शताब्दी में आया। यह देश का पहला शहर था जिसकी अपनी रेल लाइन थी। कलकत्ता के साथ ही ये दो ऐसे शहर थे जहाँ समाचार-पत्रों का प्रादुर्भाव हुआ।

19वीं शताब्दी के द्वितीय भाग मे बोम्बे में कई नागरिक और सार्वजनिक इमारतों का निर्माण हुआ जो प्राचीन विक्टोरियन शैली की थी। उदाहरण के लिए सचिवालय (1874), परिषद हॉल (1876) तथा ऍलफिंसटन कॉलेज (1890)। लेकिन सबसे आकर्षक शैली विक्टोरियन टर्मिनल की थी जिसे अब छत्रपति शिवाजी अड्डे के नाम से जाना जाता है। लेकिन यह रेलवे स्टेशन से ज़्यादा धर्मपीठ की तरह दिखता है। इसमें नक्काशी किए हुए पत्थर तथा रंगीन शीशे की खिड़कियाँ हैं। (चित्र 8.16)

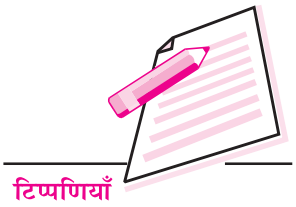

चित्र 8.16: छत्रपति शिवाजी टर्मिनल

भारत का मशहूर मुख्यद्वार गेटवे ऑफ इण्डिया भारत-सारासेनीक शैली में पीले पत्थरों से बना था जो जार्ज पंचम और रानी मेरी के भारत आगमन के सम्मान में निर्मित किया गया था। यह वर्ष 1924 में पूर्ण हुआ और इसके बनाने में 24 लाख रूपये का खर्च आया था जो उस समय बहुत बड़ी धनराशि था। इसमें 26 मीटर की एक मेहराब और चार बुर्ज हैं। इसमें बहुत ही पेचीदा जालियाँ जिनपर पीले बेसॉल्ट पत्थरों पर नक्काशी की गई है। (चित्र 8.17)

चित्र 8.17: गेटवे ऑफ इंडिया

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय से ही मुम्बई भारत का व्यापार एवं वाणिजय का एक अग्रिम शहर रहा है। स्टॉक एक्सचेंज, व्यापार केंद्र, प्रसिद्ध फिल्म उद्योग जिसे बालीवुड कहा जाता है तथा पश्चिमीकरण

के नाम पर कुछ भी देखें, सब यहाँ पर है। जैसे कि आपको पता है, आज यह भारत का सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक शहर है। इसमें महत्वपूर्ण उद्योग जैसे – कपड़ा, वित्त एवं फिल्म निर्माण है। आप मशहूर बालीवुड से अवगत होंगे जो विश्व में सबसे बड़ा फिल्म उद्योग है। यहाँ कई हिंदी फिल्में बनती हैं। किसी समय भारत के मुख्य द्वार के नाम से प्रसिद्ध शहर में अंग्रेजों के साक्ष्य आज भी दिखाई देते हैं।

## पाठगत प्रश्न 8.6

1. चेन्नई के चार प्रमुख स्थानों के नाम बताएँ।

   i) _____ ii) _____

   iii) _____ iv) _____

2. कोलकाता के चार प्रसिद्ध स्थानों के नाम बताएँ।

   i) _____ ii) _____

   iii) _____ iv) _____

3. मुम्बई के चार प्रमुख स्थानों के नाम बताएँ।

   i) _____ ii) _____

   iii) _____ iv) _____

### 8.6.4 दिल्ली

क्या आप जानते हैं कि वर्ष 1911 में दिल्ली अंग्रेजी शासन की राजधानी बनी। इसीलिए दिल्ली ने वर्ष 2011 में अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूरे होने का जश्न मनाया। स्पष्टतया 1911 में आधुनिक शहर जिसे अब नई दिल्ली कहा जाता है बना। हालाँकि दिल्ली का इतिहास इससे भी पुराना है। यह माना जाता है कि सात पुराने शहरों को मिलाकर दिल्ली बनाई गयी थी। ऐसा माना जाता है कि दिल्ली का पहला शहर युधिष्ठिर ने यमुना के दाहिने किनारे पर बसाया था, जो पांडव पुत्रों में सबसे बड़ा था। इसका नाम इन्द्रप्रस्थ था। यकीनन आपको महाभारत की कहानी याद होगी जिसमें कौरव और पांडवों के मध्य भयंकर युद्ध हुआ था।

किवदंतियों के अनुसार दिल्ली की स्थापना राजा ढिल्लू ने की थी। द्वितीय शताब्दी के दौरान भूगोलवेत्ता टोलेमी ने नक्शे पर दिल्ली को देदला नाम से अंकित किया था। उस समय के बाद से आगे दिल्ली का निरंतर विकास होता रहा। आज इसका विस्तार इतना ज़्यादा हो गया है कि आज यह न केवल भारत अपितु विश्व के बड़े शहरों में से एक है।

दिल्ली से जुड़ी एक रोचक किंवदन्ती है। कहानी इस प्रकार है– एक सर्प वासुकी को सम्राट अशोक के काल में कुतुबमीनार परिसर के अंदर एक लोहे के खंभे के साथ जमीन में गाड़ दिया

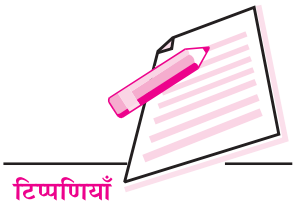



गया। कई वर्षों के बाद जब तोमर वंश के शासक अनंगपाल ने दिल्ली पर कब्जा किया तो उसने इस लोहे के खंभे को उखाड़कर उस सर्प को मुक्त कर दिया। उस समय यह भविष्यवाणी की गई कि कोई भी साम्राज्य लंबे समय तक शासन नहीं कर पायेगा। तोमर वंश के बाद चौहान आये जिन्होंने किला राय पिथौरा शहर की स्थापना लाल कोट क्षेत्र में महरौली के निकट की। पृथ्वीराज चौहान महरौली से ही अपने शासन को चलाता था।

चित्र 8.18: कुतुबमीनार

दिल्ली एक बार फिर प्रकाश में उस समय आई जब दास साम्राजय सत्ता में आया। आपको पढ़कर याद होगा कि कुतुबुद्दीन ऐबक ने कुतुबमीनार का निर्माण शुरू करवाया था। (चित्र 8.18)। जिसको इल्तुतमिश ने पूरा करवाया। बाद में जब अलाउद्दीन खिलजी सुल्तान बना इसका नाम सिरी था जो शक्ति का केन्द्र होता था। सिरी का किला आज भी है तथा दिल्ली के इस क्षेत्र को शाहपुरजट के नाम से जाना जाता है। सिरी की भी एक रोचक कहानी है। अलाउद्दीन खिलजी के शासन को मंगोल आक्रमण का निरंतर भय था। इनमें से कुछ मंगोल जो यहाँ पर रह गये वे शहर में विद्रोह करते रहते थे। अलाउद्दीन खिलजी ने इन विद्रोहियों के सिर कटवाकर शहर की दीवारों के नीचे दफना दिए थे। इसलिए इस स्थान का नाम सिरी पड़ा। जैसा कि आप जानते हैं कि सिर का अर्थ 'सर' होता है। हम आज भी इस शब्द का प्रयोग सिर के लिए करते हैं।

कुछ वर्षों बाद जब तुलगक साम्राज्य सत्ता में आया तो सुल्तान गियासुद्दीन तुगलक ने तुगलकाबाद शहर का निर्माण करवाया। इसका निर्माण एक मजबूत नगर के रूप में किया गया था। गियासुद्दीन की मृत्यु के पश्चात मुहम्मद बिन तुगलक (1320-1388) ने पुराने दिल्ली शहर को एक इकाई के रूप में जहांपनाह के नाम से स्थापित किया चित्र 8.19)।

चित्र 8.19: तुगलकाबाद फोर्ट

इब्नबतूता जो मोहम्मद बिन तुगलक के दरबार में था ने इस शहर का सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया है। उसने इसके विषय में लिखा है ''भारत का एक महानगर एक वृहद और खुबसुरत शहर, बल एवं सुंदरता का जोड़। यह एक ऐसी दीवार से घिरा है जिसका विश्व में कोई सानी नहीं है तथा भारत का सबसे बड़ा शहर तथा समस्त मुस्लिम पूर्व देश से बड़ा शहर है।

तुगलक साम्राज्य का एक और महत्वपूर्ण शासक फिरोज शाह था। इसके शासन के दौरान दिल्ली की घनी आबादी थी जो एक विस्तृत क्षेत्र पर फैली हुई थी। उसने फिरोजशह कोटला के समीप फिरोजाबाद शहर की स्थापना की। हालाँकि समरकंद के राजा तैमूर ने 1398 में इसकी शान को नष्ट कर दिया जिसमें जहाँपनाह भी शामिल था। तैमूर अपने साथ भारतीय वास्तुकला और यहाँ के कामगारों को समरकंद में मस्जिद बनवाने के लिए ले गया। इसके पश्चात आने वाले शासक आगरा में अपनी राजधानी ले गये।

यह मुगल शासक हुमाँयू था जिसने प्राचीन इन्द्रप्रस्थ के टीले पर दीनपनाह का निर्माण करवाया। हालाँकि हुमायूँ के परपोते शाहजहाँ ने दिल्ली की शान को पुनः प्राप्त किया। उसने 1639 में दिल्ली में लाल किले का निर्माण शुरू करवाया तथा इसे 1648 में पूर्ण किया। उसने प्रसिद्ध जामा मस्जिद का निर्माण आरम्भ करवाया। शाहजहाँ के शहर को शहजहानाबाद कहा जाता था। महान कवियों जैसे दर्द, मीर-ताकी-मीर और मिर्जा गालिब इत्यादि ने गजलों और उन भाषाओं की रचना की जैसे इस समय उर्दू प्रचलन में थी। ऐसा माना जाता है कि शाहजहानाबाद ईराक के बगदाद शहर और तुर्की के कॉसटेन्टिपोल से भी सुन्दर शहर था। शताब्दियों उपरान्त इस शहर को नादिर शाह (1739) ने लूटा और नष्ट किया तथा अहमद शाह अब्दाली (1748) ने भी लूटा। इसके भीतर निरंतर विद्रोह भी होते रहे। इन सभी से यह शहर कमजोर हो गया। इन सभी समस्याओं के बावजूद दिल्ली के पास देने के लिए बहुत कुछ था जैसे - संगीत, नृत्य, ड्रामा तथा स्वादिष्ट व्यंजनों की विविधता के साथ सांस्कृतिक भाषा और साहित्य।

यह कहा जाता था कि दिल्ली 24 सूफी संतों का घर था जिसमें से सर्वाधिक प्रसिद्ध जहाँपनाह क्षेत्र से थे। इनमें से कुछ थे:

1. कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी जिसका खनक अथवा डेरा महरौली में था।
2. निजामुद्दीन औलिया, जिसका खनक निजामुद्दीन में था।

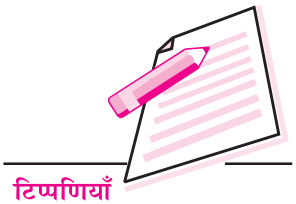



3. शेख नसीरूद्दीन महमूद, जो आज चिराग-ए-दिल्ली नाम से लोकप्रिय है।

4. अमीर खुसरों जो एक महान कवि, संगीतकार और विद्वान थे।

1707 के पश्चात मुगल शक्ति क्षीण होने लगी फलस्वरूप दिल्ली कमजोर हो गई। 1803 में अंग्रेजों ने मराठों को हराकर दिल्ली पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। कश्मीरी गेट और सिविल लाईन क्षेत्र उनके प्रमुख केन्द्र बन गए। जहाँ पर अंग्रेजों ने कई खूबसूरत इमारतें बनबाई। वर्ष 1911 में अंग्रेजों ने दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया तथा यहाँ एक नवीन शहर को बसाया गया जिसे नई दिल्ली कहा जाता है। यह राजसी तर्ज पर बसाई गई। इंडिया गेट का विशाल ढांचा, वायॅसराय का घर जो आज राष्ट्रपति भवन है, संसद भवन तथा उत्तरी और दक्षिणी खंडों आदि का निर्माण भारतीय जनता को प्रभावित करने के लिए किया गया। इस सबके बनवाने का मुख्य कारण भारतीय जनता पर अंग्रेजी साम्राजय की सर्वश्रेष्ठता, राज-शक्ति के साथ-साथ ब्रिटिश राजशाही को दिखाना था। इस नवीन शहर का निर्माण 1932 में पूर्ण हुआ। कनॉट प्लेस आज भी शहर का महत्वपूर्ण व्यापार केन्द्र है। दिल्ली आज भी भारत का महत्वपूर्ण व्यापार, संस्कृति और राजनीति का केन्द्र है। विशाल इमारतें, सुन्दर पार्क, पुल, मैट्रो रेल, सुन्दर हवाई अड्डा, शैक्षिक केन्द्र, अजायबघर, बड़े थोक बाजार, विश्व के बहुत से देशों के दूतावास तथा सभी देशों के उच्चायुक्तों के केन्द्र, बड़े मॉल, मुख्य उद्योग इत्यादि सभी मिलकर इसे सुन्दर शहर बनाते हैं। कहा जाता है कि दिल्ली दिलवालों की है (दिल्ली विशाल दिल वालों की है)।

## पाठगत प्रश्न 8.7

1. दिल्ली के अंतर्गत शहरों का मिलान उनके शासकों से करें जिन्होंने उनका निर्माण किया।

| क्र.सं. | शहर का नाम | शासक का नाम जिसने इसे बनवाया |
|---|---|---|
| 1. | इन्द्रप्रस्थ | पृथ्वीराज चौहान |
| 2. | लाल कोट | मुहम्मद बिन तुगलक |
| 3. | मेहरौली | युधिष्ठिर |
| 4. | सीरी | फिरोजशाह तुगलक |
| 5. | जहाँपनाह | हुमायूँ |
| 6. | तुगलकाबाद | शाहजहाँ |
| 7. | फिरोजाबाद | अलाउद्दीन खिलजी |
| 8. | दीनपनाह | अनंगपाल तोमर |
| 9. | शहजहाँनाबाद | गियासुद्दीन तुगलक |

2. जहाँपनाह क्षेत्र के चार सूफी संतों के नाम बताएँ।

i) _____ ii) _____

iii) _____ iv) _____

## आपने क्या सीखा

- भारतीय वास्तुकला और मूर्तिकला का इतिहास इतना पुराना है जितना सिंधु घाटी की सभ्यता।
- वास्तुकला भारत के किसी भी भाग की विविध संस्कृति जानने की कुंजी है क्योंकि यह विविध समय की सांस्कृतिक परम्पराओं और धार्मिक प्रथाओं से प्रभावित रही है।
- भारत में स्तूप, विहार और चैत्यों के निर्माण में बौद्ध एवं जैन धर्मों का बहुत योगदान है।

  गुप्त, पल्लव, और चोलों के शासनकाल में मंदिर वास्तुकला फली-फूली।
- दिल्ली सल्तनत और मुगल अपने साथ फारसी प्रभाव को लेकर आये। हम भारत-फारसी वास्तुकला शैली के गवाह हैं।
- ब्रिटिश और अन्य औपनिवेशिक, शक्तियाँ भारतीय वास्तुकला पर यूरोपीय प्रभाव लेकर आये और इन्होंने स्थानीय वास्तुकला पर प्रभाव डाला तथा औपनिवेशिक शैली की वास्तुकला को स्थापित किया। इनमें सामग्री का उपयोग इमारतों को सजाने तथा राजसी शौक दिखाने के लिए करते थे।
- हड़प्पा सभ्यता से शुरू होकर, भारत की नगर योजना का एक सशक्त इतिहास रहा है जिसे 2350 ई.पू. से देखा जा सकता है।
- तब से कई नगरों का निर्माण हुआ।
- 1594 में 2837 नगर थे।
- 20वीं शताब्दी के आरम्भ में बोम्बे (अभी मुम्बई), कलकत्ता (अभी कोलकाता), और मद्रास (अभी चेन्नई) प्रशासनिक, व्यापार के साथ उद्योगों के महत्वपूर्ण शहर थे।
- 1911 में दिल्ली ब्रिटिश शासन की राजधानी बनी। हालाँकि दिल्ली का इतिहास इससे भी पुराना है।
- यह माना जाता है कि प्राचीन काल में सात प्रमुख शहर थे जिनको मिलाकर दिल्ली बनाई गई। ये संभवतया: इन्द्रप्रस्थ, लाल कोट, मेहरौली, सीरी, तुगलकाबाद, फिरोजाबाद और शाहजहाँबाद थे।

## पाठांत प्रश्न

1. हड़प्पा सभ्यता की वास्तुकला शैलियों का वर्णन कीजिए।
2. गुप्त, पल्लव और चोल शासकों के भारत में मंदिर वास्तुकला में योदान का वर्णन कीजिए।
3. भारत में पाये जाने वाली विविध वास्तुकला एवं मूर्तिकला शैलियों के विषय में बताइए।

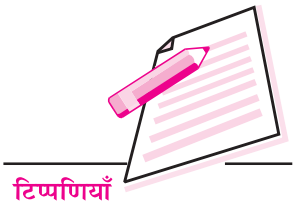



4. बौद्ध एवं जैन धर्म के भारतीय वास्तुकला में योगदान की विवेचना कीजिए।

5. दिल्ली सल्तनत काल में निर्मित स्मारकों को आप कैसे देखते हैं?

6. मुगल काल के दौरान वास्तुकला भारतीय, फारसी, मंगोल और मुगल शैली का संश्लेषण थी। विवेचना कीजिए।

7. आप अपने शब्दों में दिल्ली की कहानी सुनाइए।

8. 'दिल्ली है दिलवालों की' कहावत की सत्यता का पता करें। इस पर एक निबन्ध लिखें। इसके लिए आप इंटरनेट अथवा पुस्तकालय से प्राप्त पुस्तकों की मदद ले सकते हैं।

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### 8.1

1. उपमहाद्वीप में महान साम्राज्यों के उत्थान एवं पतन ने भारतीय संस्कृति के विकास और आकृति को प्रभावित किया।

2. जिप्सम खरल से बनी अच्छी तरह पकायी हुई ईंटों की कई परतों को आपस में मिलाकर पूर्ण निर्माण कार्य किया जाता था, जिससे निर्माण मजबूत बनता था। इमारत की मजबूती इस तथ्य से देखी जा सकती है कि पिछले पाँच हजार साल वर्षों में आए विनाशों से बचकर आज भी अडिग खड़ी है।

3. मोहनजोदड़ो में प्राप्त स्नानागार उनके यांत्रिक कौशल का साक्ष्य है।

4. गुप्त काल के दौरान

### 8.2

1. साँची स्तूप और सारनाथ स्तूप

2. मोनोलिथिक पत्थर बुर्जों पर

3. गंधार स्कूल, मथुरा स्कूल, अमरावती स्कूल

4. उड़ीसा में

5. राष्ट्रकूट

6. पल्लव

7. मंदिर वास्तुकला शैली जिसमें विमान और शिखर, ऊँची दीवारें और गोपुरम मुख्य द्वार

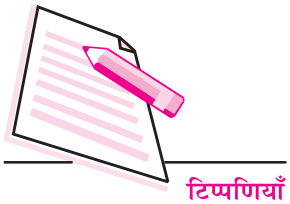

टिप्पणियाँ



8. वृह्देश्वर मंदिर
9. शिखर युक्त मंदिर (सर्पिल छत्तें), गर्भगृह (पवित्र स्थान; और मंडाप (खम्भों से बने बड़े कक्ष)
10. नरसिंह देव - I
11. दिलवाड़ा मंदिर

## 8.3

1. गुम्बद, मेहराब, मीनारें
2. दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद, कुतुब मीनार, मुहम्मद तुगलक मकबरा, फिरोज तुगलक का मकबरा, इब्राहिम लोधी का मकबरा, शेरशाह का मकबरा सासाराम में
3. गोल गुम्बज
4. मुगल शासन के दौरान इमारतों में सजावटी डिजाइन
5. बुलन्द दरवाजा

## 8.4

1. बेसिलिका बेाम जीसस तथा सेंट फ्रांसिस का चर्च
2. लुटियन्स
3. यूनानी और रोमन वास्तुकला शैलियाँ
4. इसमें औपनिवेशिक कलाकृतियों को रखा गया है
5. फ्रांसीसी वास्तुकार कोरबीजर
6. एक आस्ट्रेलियन वास्तुविद स्टेन
7. (i) राज रवेल (ii) चार्ल्स कोरिआ

## 8.5

1. हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, कालीबंगा, सुरकोतड़ा, राजगीर, वाराणसी, अयोध्या, हस्तिनापुर, उज्जैन, श्रावस्ती, कपिलवस्तु, कौशाम्बी, और अन्य स्थान जो इस पाठ में नहीं बताये गये।
2. इनमें से कोई पाँच - पणजी, बॉम्बे, मछलीपट्टनम, नागापट्टनम, मद्रास, कोलकाता अथवा कोई अन्य। इस पाठ में नहीं बताया गया हो।

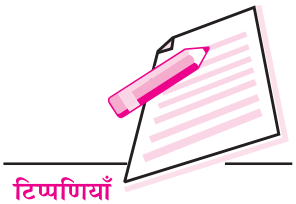



3. इनमें से कोइ पाँच – मसूरी, शिमला, नैनिताल, दार्जलिंग, शिलाँग, नीलगिरी, कोड़ाइकनाल अथवा कोई अन्य। इस पाठ में न बताया गया हो।

4. नागरिक अधिकारी

5. सेना अधिकारी

## 8.6

1. उच्च न्यायालय की इमारत, बर्फ घर, सेंट जॉन गिरजाघर, बड़ा डाकखाना अथवा कोई अन्य जो इस पाठ में न बताया गया हो।

2. इनमें से कोइ चार – हावड़ा ब्रिज, परिषद हॉल, ऐलिफिंस्टन कॉलेज, विक्टोरिया टर्मिनल (आधुनिक छत्रपति शिवाजी टर्मिनल;, भारत का मुख्य द्वार अथवा कोई अन्य जो इस पाठ में नहीं बताए गए हों।

## 8.7

1.

| क्र. सं. | शहर का नाम | शासक का नाम जिसने इन्हें बनवाया |
|---|---|---|
| 1. | इन्द्रप्रस्थ | युधिष्ठिर |
| 2. | लाल कोट | अनंगपाल तोमर |
| 3. | मेहरौली | पृथ्वीराज चौहान |
| 4. | सीरी | अलाउद्दीन खिलजी |
| 5. | जहाँपनाह | मुहम्मद बिन तुगलक |
| 6. | तुगलकाबाद | गियासुद्दीन तुगलक |
| 7. | फिरोजाबाद | फिरोजशाह तुगलक |
| 8. | दीनपनाह | हुमायूँ |
| 9. | शहजहाँनाबाद | शाहजहाँ |

2. कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी, निजामुद्दीन ओलिया, शेख नसीरूद्दीन महमूद, अमीर खुसरो अथवा कोइ अन्य जो इस पाठ में नहीं बताया गया हो।